लोक प्रशासन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

लोक प्रशासन

डॉ. समरेन्द्र बहादुर शर्मा

नमूना • SAMPLE

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

लोक प्रशासन

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-23-9

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

विषय-सूची

	प्राक्कथन	***vii***
1.	भारतीय लोक प्रशासन	1
2.	लोक प्रशासन का संगठन	17
3.	भारतीय प्रशासन का संवैधानिक संबंध	28
4.	संविधान में प्रशासन की संगठनात्मक संरचना	44
5.	भारतीय प्रशासन व्यवस्था पर ब्रिटिश सरकार का प्रभाव	59
6.	प्रधानमन्त्री	69
7.	राष्ट्रपति	87
8.	केन्द्रीय सचिवालय	103
9.	भारतीय संसद	118
10.	जिला प्रशासन	132
11.	वित्तीय प्रशासन	153
12.	आर्थिक नियोजन एवं प्रशासकीय सुधार	173
13.	योजना आयोग एवं प्रशासन का पारस्परिक संबंध	187
14.	भारतीय प्रशासन पर न्यायिक नियन्त्रण	200
15.	भारत में नौकरशाही	209
16.	भारत में सार्वजनिक क्षेत्र का उद्‌भव	228
17.	राज्य प्रशासन	243
18.	स्थानीय प्रशासन	258

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

भारत में लोक प्रशासन को प्रभावशाली बनाने हेतु संविधान में विभिन्न प्रकार के प्रावधाान किए गए हैं। इसलिए प्रजातन्त्रीय एवं गणतान्त्रिक प्रशासन प्रबन्ध संसदीय और संघीय–व्यवस्थाओं का मिश्रण, कल्याणकारी राज्य की स्थापना, व्यक्तिगत अधिकार और सामाजिक न्याय के मध्य समन्वय, स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष न्यायिक व्यवस्था, योग्यता के आधार पर व्यवस्था आदि विशेषताओं से पता चलता है कि भारत की संविधानिक व्यवस्था का स्वरूप कितना प्रभावशाली है। इनमें हमें उन सामान्य सिद्धान्तों का भी आभास है जिनके अन्तर्गत भारतीय प्रशासन को अपना कार्य-संचालन करना है।

लोक प्रशासन एक विशिष्ट शैक्षिक क्षेत्र है। यह मुख्य रूप से सरकारी कार्यकलापों से युक्त तंत्र एवं प्रक्रियाओं से संबंध रखता है। प्रशासन की परिभाषा,''कुछ सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य द्वारा किए गए सहकारी प्रयास'' के रूप में की गई है। इस प्रकार से की गई परिभाषा के अनुसार प्रशासन की विभिन्न संस्थाओं जैसे व्यापारिक फर्म, चिकित्सालय, विश्वविद्यालय और सरकारी विभाग आदि में देखा जा सकता है। इस सामान्य धारणा के एक पहलू के रूप में लोक प्रशासन, प्रशासन का वह भाग है जो एक विशिष्ट राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य करता है। लोक प्रशासन राजनीतिक निर्णयों को कार्यरूप में परिणत करने का एक साधन है। कार्य पूरा करने के लिए योजना बनाना, उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का निर्माण करना, निर्णय लेना, जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए विधायिका एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ कार्य करना, संगठनों का निर्माण एवं पुनर्निर्माण करना, कर्मचारियों को निर्देश देना और उनकी गतिविधियों का संचालन करना, नेतृत्व प्रदान करना, संचार संबंधी कार्य करना, कार्य करने की विधियाँ खोजना और उनका मूल्यांकन करना, सरकारी अधिकारियों द्वारा किए गए कार्य और उन पर नियंत्रण रखना, ये सभी लोक प्रशासन ही है। यह सरकार के कार्य का वह भाग है जिसके द्वारा सरकार के उद्देश्य और लक्ष्यों की प्राप्ति होती है।

SAMPLE

लोक प्रशासन के अन्तर्गत वे सारे सरकारी कार्यकलाप आते हैं, जो विभिन्न स्तरों पर, जैसे कि केन्द्रीय, राज्य अथवा प्रांतीय (संघीय ढाँचे में) एवं स्थानीय स्तरों पर, लोक हित में किए जाते हैं। लोक प्रशासन मुख्य रूप से इन्हीं कार्यकलापों के क्रमबद्ध अध्ययन का विषय है। सरकार, राजनीतिक सत्ता के रूप में सामाजिक जीवन की मुख्य नियामक है। गणतंत्र के उदय और एक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना के साथ ही सरकारी कार्यकलाप भी बड़ी तेजी से बढ़े हैं। इतिहास की गति बताती है कि अब विनियमन से बढ़कर सेवा और कल्याण कार्य शासन के मुख्य लक्ष्य बन गए हैं। ''पुलिस राज्य'' का स्थान अब धीर-धीरे लोकप्रिय शासन ने लिया है, जो स्वयं जनता निकट सहयोग से, अधिक से अधिक लोक कल्याण के हित में हुआ है। बढ़ती हुई नौकरशाही, विभिन्न प्रकार के शासकीय एवं अर्द्धशासकीय संस्थाओं का निर्माण, बढ़ते हुए खर्च एवं जनजीवन पर पूर्ण नियंत्रण, ये सब शासन के बढ़ते हुए कार्यकलापों का ही परिणाम है। जनजीवन पर सरकार के बढ़ते हुए व्यापक प्रभाव एवं नियंत्रण को देखते हुए, इसके संगठन, अधिकारों के आधार, कार्यक्षेत्र, वित्तीय मामलों तथा समाज पर इसके प्रभाव का अध्ययन और परीक्षण बौद्धिक दृष्टि से आवश्यक है।

भारतीय लोक प्रशासन पेपर स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए लोक-प्रशासन विषय के पाठ्यक्रमों में सभी विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। बहुत से विश्वविद्यालयों में यह राजनीतिशास्त्र के पाठ्यक्रमों में भी पढ़ाया जाता है। इसके अतिरिक्त सभी राज्यों की लोक प्रशासन संस्थानों में यह नागरिक सेवा के कर्मचारियों को प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है। अतः विषय की बढ़ती लोकप्रियता के कारण यह आवश्यक हो गया है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले उम्मीदवारों व स्नातकोत्तर परीक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए एक प्रमाणिक पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध हो सके, यह आवश्यकता पूर्ण करने के लिए यह पुस्तक तैयार की गई है।

हम आशा करते हैं कि पाठक इस पुस्तक का अध्ययन कर लाभ प्राप्त करेंगे।

डॉ. समरेन्द्र बहादुर शर्मा